श्री अन्न का उत्पादन व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दें

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि बदलते परिवेश में श्री अन्न (मिलेट्स) का उत्पादन व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना समय की मांग है। श्री अन्न का उत्पादन, प्रोसेसिंग व मार्केटिंग को बढ़ावा देने में एफपीओ की भूमिका अहम होगी। इसके सहयोग से किसान एक ही प्लेटफार्म पर उत्पादन से लेकर मार्केटिंग तक का कार्य कर बेहतर लाभ ले सकते हैं। इस दिशा में विवि एवं सरकार हरसंभव सहयोग को लगातार प्रयासरत है।

वे बुधवार को विवि के विद्यापति सभागार में किसानों व वैज्ञानिको को संबोधित कर रहे थे। मौका था कृषक उत्पादक संगठन द्वारा जलवायु अनुकूल कृषि के तहत बिहार में श्री अन्न को बढ़ावा विषय पर आयोजित चिंतन-मंथन संगोष्ठी का। उन्होंने कहा कि श्री अन्न पौष्टिक होने के साथ कई गुणों से भरपूर है। पूर्व के वर्षों में लोग श्री अन्न का उत्पादन व सेवन काफी करते थे। वहीं निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने मिलेट्स के उपयोग से मिलने वाले लाभ, एफपीओ की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। विवि में मिलेट्स की परियोजना निदेशक डॉ. श्वेता मिश्रा ने इसके उत्पादन के लिए जागरूकता बढ़ाने पर बल दिया। स्वागत करते हुए जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के परियोजना निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि लोगों को अपने भोजन में श्री अन्न को शामिल करने की जरूरत है। उन्होंने तीसरी फसल के रूप में मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने पर बल दिया। संचालन डॉ. ऋतंभरा व धन्यवाद आयोजन सचिव डॉ. जितेन्द्र प्रसाद ने किया। मौके पर डीन डॉ. केएम सिंह, कुलपति के ओएसडी अनिल शर्मा, ई. अनुपम अमिताभ, डॉ. शैलेश कुमार, डॉ. गीतांजलि आदि मौजूद थे।

पूसा कृषि विवि के विद्यापति सभागार में दीप प्रजवलित कर समारोह का शुभारंभ करते कुलपति व अन्य।

Hindustan 28-09-2023

आयोजन • अब समय आ गया है, जिसमें देश के हर नागरिक की थाली में श्रीअन्न मौजूद होगा

विवि में चल रहे शोध कार्यों से किसान होंगे समृद्ध, सभी श्रीअन्न को दें बढ़ावा : कुलपति

भास्कर न्यूज पूसा

मोटा अनाज सामा के 10 प्रभेद को डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय ने रिलीज किया

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति।

भारत सदियों पूर्व से ऋषि और कृषि का स्वतंत्र रूप से देश रहा है। वेदों के पन्नों को पलटकर देखा जाए तो 05 जुलाई 1784 ईस्वी में ही पूसा की इस धरती का नामकरण पूषण देवता ने पूसा कर दिया था। इस जगह पर पशुओं के पोषण से संबंधित अनुसंधान किया जाता था। इतना ही नहीं सर्वप्रथम प्राकृतिक खेती का शोध कार्य भी इसी धरती से शुरू किया गया था। ये बातें डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित विद्यापति सभागार में कृषक उत्पादक संगठन द्वारा जलवायु अनुकूल कृषि के अंतर्गत बिहार में श्रीअन्न को बढ़ावा देने के विषय पर आयोजित वर्कशॉप को बतौर अध्यक्ष पद से संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कही। सभागार में मौजूद सभी किसानों को वंदन करते हुए कुलपति ने कहा कि आप सब भी विवि में चल रहे अन्य शोधों का गहन अवलोकन करें जिससे किसानों में समृद्धि आएगी। उन्होंने कहा कि नजर को बदले तो नजारे बदल जाते और सोच को बदले तो किनारे बदल जाते। देश भर के लोग अच्छी खान पान न होने के कारण विकराल स्थिति से गुजर रहे हैं। श्रीअन्न का उपयोग कालांतर में ही समाप्त हो जाने के कारण आज इसे जागरूकता के दौर से गुजरना पर रहा है। उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है जिसमें देश के सभी नागरिक की थाली में किसी न किसी रूप में श्रीअन्न मौजूद होगा। उन्होंने कहा कि सरकारी लक्ष्य के अनुसार 10 हजार एफपीओ बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। सरकार की ओर से इसे पूर्ण विकसित करने के लिए 1.25 लाख करोड़ की धन राशि का बजट भी जारी किया गया है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां गुणवत्तापूर्ण प्रभेद एवं उत्पाद के लिए बाजारों की बिल्कुल भी कमी नहीं है। आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए शस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम परियोजना के निदेशक डा. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि खेत से किचेन तक मिलेट्स को लाने में हम वैज्ञानिकों की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा की मिलेट्स की खेती को बाढ़ एवं सुखार से तनिक भी अंतर नहीं परता है।

वैज्ञानिकों ने श्रीअन्न के 16 प्रभेदों को किया रिलीज

वैज्ञानिक सह परियोजना के पीआई डा. श्वेता मिश्रा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वर्ष मिलेट्स 2023 घोषित होने के उपरांत इस प्राचीन अनाज पर विस्तार से कार्य किया जा रहा है। निदेशक अनुसंधान डा. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि श्रीअन्न के खेती के लिए 16 प्रभदों को रिलीज किया गया है। जिसमें सामा के 10 प्रभेद को विवि ने रिलीज किया है। उन्होंने कहा कि क्रियाशील एफपीओ को मिलेट्स की खेती से जोड़ा जा रहा है। वर्कशॉप को डीडीएम नवार्ड अभिनव कृष्णा, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के रीजनल निदेशक अनुग्रह करिकेटा आदि ने भी संबोधित किया। मंच संचालन वैज्ञानिक ऋतंभरा ने की। वहीं धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डॉ जितेंद्र कुमार ने की। मौके पर डीन पीजीएस डा केएम सिंह आदि मौजूद थे।

Dainik Bhaskar 08-09-2023